अध्याय–4
पहाड़ी चित्रकला

भारतीय चित्रकला परम्परा में पहाड़ी चित्रकला अपनी रसमय, सुरम्य, भावात्मक प्रस्तुति के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। इन कृतियो में आत्मिक सौन्दर्य दैवीय अनुराग के साथ चित्रित हुआ है। प्राकृतिक सौन्दर्य ने इस कला को श्रेष्ठतम स्तर पर स्थापित कर दिया है। इस कला शैली की आत्मिक अभिव्यक्ति एवं अलंकारिकता ने भारतीय कला जगत में वैचारिक व सौन्दर्य बोध को नवीन दिशा प्रदान की।

बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ में हिमाचल एवं पंजाब क्षेत्र में एक उन्नत एवं परम्परागत चित्रण परम्परा विद्यमान थी। जिसके उदाहरण इन क्षेत्रों से प्राप्त हुए है। प्रसिद्ध कला समीक्षक डॉ. आनन्द कुमार स्वामी ने इस चित्र शैली का वर्गीकरण करते हुए जिनमें बसोहली, कुल्लू, गुलेर एवं नुरपूर से प्राप्त चित्रों को अंगीकृत किया गया तथा जिनको दक्षिणी चित्र माला कहा गया। श्री अजीत घोष ने बसोहली तथा नुरपूर के आरम्भिक चित्रों को सत्रहवी शताब्दी के माने है। श्री जे.सी. फ्रेन्च ने अपने अध्ययन में कहा है कि चम्बा, मण्डी, तथा सुकेत नामक स्थान से प्राप्त आरम्भिक चित्र बसोहली शैली के प्रभाव लिए है जो कांगड़ा शैली से अपना भिन्न स्वरूप रखते हैं। अतः यह कहा जा सकता है इस क्षेत्र में मुग़ल कला के प्रभाव आने से पूर्व स्थानीय प्रभाव लिए एक परम्परागत चित्र शैली से चित्रण कार्य होता रहा है। जबकि जम्मू में अठारहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में ही एक विकसित शैली का उद्‌भव हुआ है। जम्मू अपने राजनैतिक प्रभुता के कारण विशेष महत्व रखता था। जबकि दक्षिणी चित्रमाला के अन्य क्षेत्रों में चित्रण सत्रहवीं शताब्दी में भी प्रचलित था।

उत्तरी चित्रमाला के अंतर्गत कांगड़ा चित्रशैली विशेष प्रमुख है, कांगड़ा शैली के चित्रकार वस्तुतः गुलेर से ही कांगड़ा आये थे। पूर्व में ये चित्रकार गुलेर में ही चित्रण कार्य करते थे। गुलेर चूंकि मुग़ल शासकों के संपर्क में अधिक रहा अतः यहाँ अनेक वर्षों तक कला का केन्द्र रहा। राजा संसार चन्द के कांगड़ा के शासक बनने पर कांगड़ा में कृष्ण भक्ति एवं चित्रकला को श्रेष्ठ सम्मान् मिला जिससे आकृष्ट हो कर गुलेर के चित्रकार कांगड़ा की तरफ आये। चित्रकारों का कांगड़ा आने का कारण एक यह भी था कि गुलेर के राजा गोवर्धन सिंह की मृत्यु 1770 ई. में हो गई थी। राजा गोवर्धन सिंह ने कला को विशेष संरक्षण प्रदान किया। इनकी मृत्यु के पश्चात् गुलेर के कलाकार उचित परिवेश न मिलने तथा कांगड़ा की चित्र परम्परा से आकृष्ट होकर कांगड़ा आ गए। अट्‌ठारहवी शताब्दी के अंतिम चरण में कांगड़ा राज्य भारतीय चित्रकला का महान् केन्द्र बन गया था।

पहाड़ी चित्र शैली में बसोहली शैली, चम्बा शैली, गुलेर शैली, कांगड़ा शैली, कुल्लु शैली, मण्डीशैली, जम्मू शैली, पुंछ शैली, गढ़वाल शैली, कश्मीर शैली विशेष प्रतिनिधि उप शैलियां हैं जो अपनी विशिष्ट कला शिल्प व अभिव्यक्ति के स्तर पर पहाड़ी चित्रकला की प्रतिनिधि शैलियो के रूप में जानी जाती है।

बसोहली चित्र शैली–

बसोहली वर्तमान में जम्मू राज्य के कठुवा नामक जिले के अंतर्गत आता है। आज यह स्थान साधारण गाँव के रूप में उपस्थित है। लेकिन अपने समृद्धशाली परम्पराओं तथा जीवन शैली का परिचय वहाँ प्राप्त भग्नप्रायः खण्डहर सहज ही दे देते हैं। वैभवहीन राजप्रसाद तथा अट्‌टालिकाओं के अवशेष अपने आप में गौरवशाली इतिहास छुपाये हुए हैं।

प्राचीन काल में बसौली की राजधानी बालौर या बल्लपुर

थी। यह वर्तमान बसौहली से 18 किलोमीटर पश्चिम में है। आठवीं शती ई. से लेकर ग्यारहवीं शती ई. तक बल्लपुर स्वतंत्र रियासत थी। बसोहली राज्य का संस्थापक भोगपाल (735 ई.) था। ऐतिहासिक दृष्टि से सोलहवीं शताब्दी तक बसोहली राज्य का कोई प्रमुख घटनाक्रम नहीं रहा। 1590 ई. में बसोहली का राजा कृष्णपाल अकबर के संपर्क में आया। इसने अकबर के दरबार में उपस्थित होकर बहुमूल्य भेंट प्रदान की। कृष्णपाल के पश्चात् उसके पौत्र भूपतपाल (1598–1655 ई.) ने ही आधुनिक बसोहली की स्थापना की तथा मुग़ल शासक शाहजहाँ के दरबार में उपस्थित हुआ। भूपतपाल द्वारा शाहजहाँ का सम्मान करते हुए एक चित्र उपलब्ध है जो डोगरा आर्ट गैलरी जम्मू में सुरक्षित है। भूपतपाल के पश्चात् बसोहली शासकों में कला के प्रोत्साहन की दृष्टि से संग्राम पाल, मेदनीपाल तथा अमृतपाल के शासनकाल विशेष उल्लेखनीय है। अमृतपाल 1757 ई. में राजा बना। इस काल में बसोहली कला का प्रमुख केन्द्र बन गया था। बसोहली में चित्रण कार्य राजा कल्याणपाल तक अनवरत चलता रहा। कल्याण पाल 1845 ई. में बाल अवस्था में ही बसोहली का राजा बन गया था। 1857 ई. में कल्याणपाल मृत्यु को प्राप्त हो गया। कल्याणपाल के कोई सन्तान नहीं होने से बसोहली राजवंश समाप्त हो गया।

बसोहली में मेदनीपाल ने रंग महल एवं शीशमहल का निर्माण करवाया जिनकी भित्तियों पर नायिका भेद आदि विषयों पर आधारित चित्र बनवाये गये थे। बसोहली चित्र शैली के विकास में कांगड़ा एवं चम्बा शैली का भी योगदान रहा, परन्तु बसोहली शैली इन शैलियों से भिन्न अपनी पृथक पहचान रखती है। बसोहली शैली के विकास में कश्मीर शैली तथा स्थानीय शैलियों का भी योगदान रहा है। पंजाब में पहाड़ी कलम या कांगड़ा शैली के जो चित्र मिले हैं वस्तुतः बसोहली शैली के ही है। जम्मू की अपनी कोई शैली नहीं थी अतः आरम्भिक काल में यहाँ से मिले चित्र भी श्री अजित घोष तथा नानालाल चमनलाल मेहता ने बसोहली शैली के चित्र ही माने हैं। बसोहली शैली के चित्रों के सम्बन्ध में श्री मेहता ने कहा कि ''बुन्देलखण्ड के चित्रकारों की तरह बसोहली के चित्रकार को भी नीले, पीले, लाल और सादे रंगो से विशेष अनुराग था। इस शैली के चित्रों में कोमलता उतनी नहीं है, जितना कि तेज है। इन चित्रों में बाह्य आडम्बर तथा ऊपरी लावण्य के प्रति कम रूझान दिखाई देता है।''

बसोहली शैली चित्रों के विषय :–

धार्मिक चित्र – बसोहली में वैष्णव धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी अतः कृष्ण जीवन संबंधी चित्रों की बहुतायत है। सामान्य जन मानस में कृष्ण अनुराग चरम पर था। सूरदास, मीरा, केशवदास व बिहारी के भक्ति साहित्य के प्रचलन से सामान्य जन आत्म विभोर था। अतः बसौहली की कला भी साहित्य दर्शन एवं आध्यात्मक भाव को अपने भीतर समेटे हुए है। सामान्य जन विष्णु के विभिन्न रूपों में मुख्यतः राम एवं कृष्ण को अपना आराध्य मानता था। अतः चित्रों में धार्मिक विषय को विशेषता के साथ चित्रित किया गया।

काव्य आधारित चित्रण : बसोहली चित्र शैली में साहित्य आधारित चित्रों की लंबी श्रृंखला है। भानुदत्त कृत रस मंजरी, जयदेव कृत गीत गोविन्द काव्य पर अनेक चित्र बने। राजा कृपाल पाल को रस मंजरी अत्यन्त पसन्द थी। अतः इस प्रिय विषय पर अनेक चित्रों का निर्माण करवाया। इस ग्रंथ में नायक व नायिका भेद, विषय पर विभिन्न नायिकाओं का चित्रण रूचिकर ढंग से किया है। जिनमें उत्कण्ठिता तथा अभिसारिका नायिका विशेष दृष्टव्य है। परवर्ती चित्रकारों ने बारहमासा चित्र श्रृंखलाओं का चित्रण भी विशेष रूचि के साथ चित्रित किया है। इसी प्रकार इस शैली के चित्रकारों का एक और रूचिकर विषय रागमाला था। विभिन्न राग व रागिनियों का चित्रण इसके अंतर्गत किया गया। रागमाला एवं बारहमासा चित्रण में नायक के रूप में कृष्ण तथा नायिका के रूप में राधा को चित्रित किया गया है।

व्यक्ति चित्रण– बसोहली काल में चित्रकार एक दरबारी सदस्य के रूप में अपने चित्रों का निर्माण करता था। चित्रशालाओं पर राजकीय नियंत्रण था। अतः यहाँ के चित्रकार ने राजसी वैभव के चित्र तथा राजपरिवार से व्यक्ति चित्रण का कार्य भी बखूबी किया है। रनिवास से संबंधित चित्र भी बनाये गये।

बसोहली शैली के चित्रों की विशेषताएँ– बसोहली चित्र शैली अपनी सरलता, भावपूर्ण व्यंजना तथा मीनाकारी के समान चटक एवं ओज पूर्ण वर्णविन्यास के कारण विशेष महत्व रखती है। रेखाओं की सुकोमलता रूप निर्माण में लयात्मकता तथा

गठनशीलता कांगड़ा के समान परिमार्जित नहीं है किन्तु सरलता व भावपूर्ण अभिव्यक्ति कांगड़ा से अधिक प्रभावशाली ढंग से हुई है। बसोहली का आरम्भिक चित्रण स्थानीय कला तत्वों तथा लोक अभिव्यक्ति से प्रेरित होने के कारण इन चित्रकारों ने बाहय स्वरूप को अत्यधिक महत्व न देकर विषयगत भाव रंजना को प्रथमतः रखा। यही कारण है कि बसोहली चित्र शैली भाव व्यंजना में कांगड़ा से अधिक श्रेष्ठ जान पड़ती है। अभिव्यक्ति में यह शैली स्पष्टता व भावों की मधुरता लिये है।

रूप निर्माण– बसोहली चित्रकार ने पुरूष व स्त्री की मुखाकृति निर्माण में अपनी विशेष पहचान बनाई है। चेहरे के चित्रण में ढालदार माथा तथा ऊंची नाक को एक ही अटूट रेखा द्वारा प्रवाह पूर्ण बनाया गया है। आंखो की बनावट में इस शैली के चित्रकारों ने कला का श्रेष्ठ परिचय दिया है। नेत्र या चक्षु चित्रण बहुत आकर्षक है। नयन पदमाकार, कर्ण स्पर्शी तथा रस भाव से ओत प्रोत हैं। नेत्रों की मादक प्रस्तुति बसोहली चित्रों की प्रमुख पहचान है। नेत्रों के सामन ही नायक व नायिकाओं की मुद्राओं का अंकन भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। चित्रों में पात्रों की हस्त मुद्राओं का जितना रूचिकर एवं लयात्मक चित्रण बसोहली शैली में हुआ है वह अद्वितीय है। सम्भवतः अजन्ता के पश्चात् इतना आकर्षक मुद्रा चित्रण बसोहली मे ही उपलब्ध होता है।

बसोहली में न केवल मुख एवं मुद्रा का रूचिकर चित्रण हुआ है। बल्कि नाक, कान, मुंह, कपोल, ललाट एवं संपूर्ण शारीरिक गठन का कुशल अंकन किया गया है।

पात्रों के परिधान में अन्य पहाड़ी शैलियों की भांति पारदर्शी वस्त्रों के अन्दर से अंगो की कोमलता दिखाने की अभिवृत्ति यहाँ के चित्रकारों में भी रही है। निष्कर्षतः बसोहली के चित्रकार पात्रों का बड़े ही सौम्य व श्रृंगारिक स्वरूप का चित्रण कर सरसता का भाव चित्रण में लाने में सक्षम रहे हैं।

हाशिए– बसोहली चित्रों में चित्र को चारों तरफ पतला पट्टीनुमा हाशिए बनाने की प्रथा रही है। ये हाशिये सपाट रंग से बनाये जाते थे। इन हाशियों में गहरे लाल रंग का प्रयोग किया जाता था। कभी गहरे पीले रंग से भी बनाया गया है। लाल रंग के हाशियों में सफेद रंग से टाकरी लिपि में लेख भी लिखे गये है। इन हाशियों को मुग़ल चित्रकला से भिन्न माना जा सकता है। मुग़ल चित्रकला में हाशिये अपेक्षाकृत अधिक चौड़े तथा अलंकरण युक्त बनाये जाते थे।

वर्ण विन्यास– बसोहली चित्र शैली अपने चमकदार अमिश्रित रंगो के द्वारा पहचानी जाती है। रंगो में अद्भुत सौन्दर्यात्मक छटा व्याप्त है। रंगो का आकर्षण देखते ही बनता है। चमकदार रंगो के साथ विरोधी रंगतों को भी विशेष आकर्षण के साथ प्रयुक्त किया गया है। रंगो में लाल, पीला व नीला रंग विशेषता से प्रयुक्त किये गये। एम.एम. एस. रंधावा ने रंगों के बारे में लिखा है कि ''बसोहली शैली के चित्रों में पीले, लाल तथा नीले रंग का प्राथमिक व विरोधी प्रयोग आनन्ददायक और सुन्दर है। चित्रों में रंग इतनी कुशलता एवं सतर्कता से लगाये गये हैं कि वह मीने के समान चमकदार दिखाई पड़ते हैं।

प्रकृति एवं पशु चित्रण – बसोहली शैली में प्रकृति को बड़े मनोहारी रूप में चित्रित किया गया है। विभिन्न प्रकार के वृक्षों के पंक्ति रूप में गहरी पृष्ठ भूमि में हल्की रंगत द्वारा उभार कर अलंकारिक रूप में चित्रित किया गया है, जो अत्यन्त लुभावना लगता है। अधिकांश अखरोट, मोरपंखी, मंजनू तथा आम के वृक्ष बनाये गये हैं, जो चित्र भूमि पर काफी ऊपर तक आच्छादित दिखाये गये हैं। पशु चित्रण में बसोहली की अपनी एक अलग परिपाटी है। पशुओं को कमजोर व दुबला बनाया गया है। पेट चिपका हुआ, लम्बे कान तथा सींग मुड़े हुऐ बताये गये हैं। पशु जम्मू की स्थानीय प्रजाति के प्रतीत होते हैं। प्रायः कृष्ण के बाल रूप के चित्रों में गाय व बछड़ों को इस रूप में चित्रित किया गया है। रागमाला चित्रण में भी नायिका के साथ पशु को आवश्यक रूप में प्रसंगानुसार चित्रित किया गया है।

भवन चित्रण – बसोहली के चित्रण में भवन चित्रण परम्परा भी विशेष महत्व रखती है। भवनों को मुगलिया प्रभाव के साथ चित्रित किया गया है। भवन कक्षों की दीवारों में सुन्दर ताखों अथवा आलों का चित्रण किया गया है। इन ताखों में गुलाबपाश, इत्रदान, पुष्प–पात्र तथा फूलों से भरी तस्तरियां रखी है। भवन चित्रण में सुन्दर कपाटों को आकर्षक आलेखनों द्वारा सज्जित किया गया है। जालीदार खिड़कियाँ, नक्काशीदार स्तम्भ चित्र में आकर्षण का केन्द्र बनकर उभर आते हैं। अधिकांश भवन चित्रण के साथ पिंजड़े में बंद सारिका तथा अन्य पक्षियों को बनाने की अद्भुत परम्परा बसोहली शैली में देखी जाती है।

चित्र संख्या–1 साधु व कृष्ण

उपरोक्त संदर्भ में देखा जाये तो बसोहली शैली अपने युग की प्रभावशाली एवं अत्यन्त लोकप्रिय शैली रही है। समूचे पंजाब प्रदेश, गढ़वाल तथा तिब्बत व नेपाल तक इस कला का प्रचार रहा। इसकी सुलिपि, रंग विधान आदि सभी में अद्भुत आकर्षण है। न केवल बसौहली के लघु चित्रों में, अपितु इसके भित्ति चित्रों में भी भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक मान्यताओं का बड़े मनोयोग से निर्वहन हुआ है।

बसोहली शैली के प्रमुख चित्र

साधु व कृष्ण –यह चित्र बसोहली शैली में निर्मित सोलहवीं शताब्दी के अन्त का अथवा सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ का है। चित्र में भगवान कृष्ण तथा एक साधु बनाया गया है। श्री कृष्ण को नीले रंग में बनाया गया है। नीला रंग भगवान विष्णु का माना जाता है। (चित्र संख्या 1) कृष्ण ने पीले रंग की धोती पहन रखी है तथा कंधे पर लम्बा गमछा डाले हैं। सिर के बाल, जूड़े के रूप में बन्धे हैं जो सिर के मध्य खड़ा बनाया गया है। कानों में बड़े कुण्डल मोतियों के साथ पहनाये गये हैं। गले में दो लड़ी हार तथा लम्बी मोतियों की माला है। विशेष रूचिकर बात यह है कि, यहाँ पर कृष्ण को पांव में सैण्डिल पहने दिखाया गया है। कृष्ण के सामने हाथ जोड़े एक साधक खड़ा है जो श्रद्धा भाव से कृष्ण को हाथ जोड़े हुए है। उसने भी कृष्ण के समान धोती पहनी है तथा गमछा एक कंधे पर डाले हुए है। धोती का रंग कृष्ण से भिन्न लाल रंग है। बालों पर जूड़ा कृष्ण के समान ही सिर के मध्य ऊर्ध्ववत बना है। इस साधू के कानों में कुण्डल तथा गले में मोतियों तथा तुलसी या रूद्राक्ष की माला धारण की हुई है। साधु अपने शरीर पर संभवतः भभूत लगाये हुए है, जिससे साधु के शरीर का रंग सफेद वर्ण में हल्का गुलाबी मिश्रित बनाया गया है। चित्र की अग्रभूमि में मध्य दो छोटे पेड़ बनाये गये हैं तथा साधु व कृष्ण के पार्श्व स्थान पर केले व अन्य वृक्ष बनाये हैं।

समुचे चित्र की पार्श्व भूमि हरे रंग में बनाई है, जो ओज पूर्ण है। बसोहली कला का आरम्भिक स्वरूप इस चित्र में अपनी विशेषता लिए है। पेड़ों को वृत्ताकार बंधन के साथ उकेरा गया है। जिसको हल्की, गहरी व मोटी रंगत के साथ दिखाया गया है। क्षितिज रेखा चित्र के बहुत ऊपर की तरफ है जो आरम्भिक शैली की पहचान है। ऊपर बादल लम्बी कतार में जल रंगीय प्रभाव जैसे बने हैं। आकृति चित्रण बसोहली शैली का प्रतिनिधित्व करता है। बड़ी–बड़ी आंखें, उभरा हुआ ललाट तथा उठा हुआ नाक एक ही रेखा द्वारा बनाया गया है। शरीर के गठन में स्थानीय प्रभाव है तथा मांसलता के साथ भारीपन है। आकृति की बाह्य रेखाएं भी कांगड़ा से भिन्न मोटापन लिए हैं जो बसोहली शैली की स्वयं की विशेषता रही है। चित्र का हाशिया थोड़ा मोटा है तथा लाल रंग से बनाया है जिस पर टाकरी लिपि से लेखांकन भी किया हुआ है। यह चित्र विक्टोरिया एवं अल्बर्ट म्यूजियम लन्दन में संग्रहित है।

नायक–नायिका :–यह चित्र बसोहली शैली में सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का है। चित्र में नायिका अपने नायक से मिलने घनी अंधेरी रात में आई है। चित्र के मध्य में नायक व नायिका को चित्रित किया गया है। नायिका के पार्श्व में हवेली का एक हिस्सा चित्रित किया गया है। (चित्र संख्या 2) नायक के पार्श्व में पेड़ों को बनाया गया है। नायक व नायिका को गहरी पृष्ठ भूमि में चटक रंगो से चित्रित किया गया है। नायक समय पर नहीं पहुंच पाने पर सफाई देता दिखाई दे रहा है, जो

चित्र संख्या–2 नायक नायिका

उसकी हस्त मुद्राओं से सहज ही प्रतीत हो रहा है। नायिका के मुख पर नाराजगी के भाव है जो अपने हाथ को झटक कर जाहिर कर रही है।

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक बसौहली शैली के अंकन तथा रूपाकारों के चित्रण में बहुत बारीकी आ गई थी। इस चित्र में चेहरों की बनावट पूर्व की भांति ही उभरे ललाट तथा ऊंची नाक के रूप में दिखती है। किन्तु शारीरिक गठन में अनुपात तथा शरीर की सुडौलता में छरहरापन बाद की शैली का प्रभाव है। इस चित्र में शारीरिक गठन कांगड़ा के समान श्रेष्ठ स्वरूप में हुआ है। आंखें पूर्व की भांति अभी भी बड़े रूप में चित्रित है, लेकिन हाथों की मुद्राएं तथा वस्त्रों की शंकुनुमा बनावट तथा व्यवस्थित फरहन का चित्रण बसौहली की विकसित शैली का परिणाम है। इस काल के चित्रण में रेखाओं में भी पूर्व की तरह मोटापन नहीं रहा, रेखाएं अत्यन्त महीन तथा लयबद्ध बनाई गई हैं। नायिका को कंचुकी तथा घेरदार घाघरा पहने बनाया है जो पारदर्शी है। सिर पर पतला दुपट्टा है जो हाथों में घेरे हुए है। नायिका की देह प्रतीक्षा में दीपक की तरह जलते हुए चटक रंग में अंकित है। पुरूष का पहनावा मुगलिया प्रभाव लिए है, लम्बा घेरदार जामा तथा पावों में तंग जामा पहने हैं। कमर पर कमरबंद बंधा है जो यह दर्शाता है कि कार्य की व्यस्तता के कारण नायक समय पर नहीं आ सका है। नायक के पीछे पेड़ हैं, जिन्हे फूलनुमा आधारों में चित्रित किया गया है। नायक नायिका के आभूषणों को अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ चटक व स्वर्ण रंगो से अंकित किया गया है। गहरी पृष्ठभूमि पर चटक रंगों के प्रयोग, छरहरा रूपगत सौंदर्य, वस्त्रों की पारदर्शी फरहान तथा अंलकरण चित्र को अद्वितीय सौंदर्य प्रदान करता है। शैली की दृष्टि से यह बसौली शैली के श्रेष्ठतम चित्रों में से एक है।

कांगड़ा शैली –

हिमालय के पश्चिमी भू–भाग में स्थित अनेक रियासतों में कांगड़ा का नाम विशेष महत्वपूर्ण है। कांगड़ा में कटोच राजवंश के शासन का नाम प्रमुख है, यद्यपि इस पर अन्य अनेक राजवंशो का शासन भी रहा है। कटोच राजवंश में अनेक यशस्वी राजा हुए। इनमें राजा संसारचन्द का नाम सर्वोपरि है। राजा संसारचन्द ने कांगड़ा तथा वहाँ की अन्य रियासतों पर लंबे समय तक शासन किया।

कांगड़ा शैली के उद्‌भव व विस्तार में कांगड़ा के शासक राजा घमण्डचन्द (1751 ई. से 1774 ई.) की मुख्य भूमिका रही। राजा घमण्डचन्द एक कलाप्रेमी तथा प्रतिभाओं को सम्मान प्रदान करने वाला शासक था। इन्होने अपने दरबार में आस–पास से आये अनेक चित्रकारों को संरक्षण प्रदान किया। इस काल में बाहर से आये चित्रकारो में बसोहली एवं गुलेर क्षेत्र से चित्रकार अधिक रहे। इन कलाकारों ने कांगड़ा शैली को श्रेष्ठतर गुणवत्ता युक्त शैली में परिवर्तित करने का कार्य किया जिसमें यहाँ की सुरम्य पहाड़ी प्रकृति ने कला को अधिक रूचिपूर्ण बना दिया। यहाँ की शैली में स्थानीय कला तत्वों को समाहित करने का कार्य बसोहली से आये चित्रकारों ने भली–भांति किया। कांगड़ा शैली के परवर्ती काल में मुग़ल चित्रकला का प्रभाव स्पष्टतः दिखाई पड़ता है किन्तु यहाँ के आरम्भिक काल के चित्रों से सहज ही जान पड़ता है कि इन चित्रों की प्रेरणा व आधार यहाँ के भित्ति चित्र रहे हैं तथा यह शैली अपनी स्वयं की पहचान लिए हुए है। डॉ. वाचस्पति गैरोला के अनुसार – कांगड़ा शैली के चित्र भित्ति चित्रों के छोटे रूप है। इस शैली में नारी जीवन की अभिव्यक्ति, इसकी धार्मिक पृष्ठभूमि तथा उच्च आदर्शवादिता का समावेश राजपूत शैली के प्रभाव से ही हुआ था। बसोहली व गुलेर क्षेत्रों से आये चित्रकार पूर्व में भी चित्रों का निर्माण कर रहे थे तथा अपने चित्रों में स्थानीय कला तत्वों को ठेठ देसीपन प्रयोग में ला रहे थे। आगे चलकर यही स्थानीय कला तत्व मुगलिया प्रभाव के साथ परिष्कृत अवस्था में कांगड़ा शैली में प्रयुक्त हुए।

राजा संसारचन्द (1775–1823 ई.) को कलाओं से विशेष लगाव रहा जिसकी पुष्टि अंग्रेज यात्री मूर क्राफ्ट ने की है। इन्होनें अपने संस्मरण में लिखा – ''राजा संसारचन्द के दरबार में इस समय भी कई चित्रकार कार्य कर रहे थे। राजा को चित्रकला से बहुत प्रेम था। उसके पास चित्रों का एक विशाल संग्रह था।'' कांगड़ा शैली के चित्रकारों के प्रमुख केन्द्र गुलेर, नूरपूर, तीरा सुजानपुर तथा नादौन थे।

कांगडा शैली के चित्रकारों के नाम अभी तक बहुत कम प्राप्त हैं। प्राप्त नामों में फत्तू, परखू तथा कुशनलाल (खुशाला) प्रमुख हैं। कांगड़ा में नैनसुख तथा उसके परिवार के चित्रकारों का भी विशेष योगदान रहा है।

कांगड़ा के राजा संसारचन्द की मृत्यु के पश्चात् कांगड़ा

की चित्र शैली की अनुपम धारा मन्द पड़ गई। उसके बाद कांगड़ा का शासक राजा अनिरूद्ध चन्द गद्दी पर बैठा। किन्तु राजा अनिरूद्ध चन्द राजनैतिक उथल–पुथल से उद्वेलित रहा। पारिवारिक उठा–पटक में तथा अन्य रियासतों के दबाव में रहा, जिसमें कला व कलाकारों को उचित संरक्षण प्रदान न कर पाया। अंग्रेज यात्री विजने ने लिखा कि "राजा अनिरूद्ध ने अपनी समस्त बहुमूल्य वस्तुएं सतलज की ओर भेज दी तथा अनेक चित्र अपने बहनोई को भेंट स्वरूप गढ़वाल भिजवा दिये गये।" कांगड़ा रियासत अपने अंतिम काल में सिक्खों के अधीन रही। सिक्खों के पश्चात् ब्रिटिश सम्राज्य के अधीन हो गई। 1905 ई. में कांगड़ा में आये भूकम्प से कांगड़ा तहस–नहस हो गया। जीवन और कला की अद्वितीय क्षति हुई, कांगड़ा कला समाप्त प्रायः हो गई।

कांगड़ा शैली के विषय :– कांगड़ा शैली में धार्मिक चित्र बहुतायत से बने हैं। कांगड़ा के शासक वैष्णव धर्म के अनुयायी रहे हैं तथा सामान्य जन मानस भी वैष्णव धर्म के प्रति अगाध आस्था रखता था। इस कारण यहाँ के चित्रकार भक्ति काव्य तथा रीति काव्य से प्रभावित होकर कृष्ण व राधा को नायक व नायिका के रूप चित्रित करने लगे। कृष्ण की श्रृंगारिक लीलाओं के चित्रण के अतिरिक्त अनेक पौराणिक व धार्मिक विषयों को भी चित्रित किया है, जिनमें रामायण, हमीरहठ, महाभारत, नल दमयन्ति, शिव व पार्वती विषयक चित्रण प्रमुख हैं। बिहारी तथा केशवदास की रचनाओं पर आधारित चित्रण भी कांगड़ा शैली में किया गया है। जिनमें भानुदत्त की रसिक प्रिया तथा बिहारी सतसई प्रमुख है।

नायिका भेद – मध्यकालीन साहित्य में श्रृंगारिक विषयक काव्य सर्जन लोक रंजना के साथ सृजित हुआ था जिसका प्रभाव कांगड़ा शैली पर भी हुआ। यहाँ के चित्रकारों ने श्रृंगारिक विषयों को लेकर अनेक चित्र बनाये जिनमें नायिका चित्रण अत्यन्त रूचिकर विषय रहा। कांगड़ा शैली के चित्रकारों ने नायिकाओं के तीनों रूप यथा स्वकीया, परकीया तथा सामान्य नायिका को अपने चित्रों में जगह दी है। साहित्य में नायिकाओं के विभिन्न प्रकार उल्लेखित है। जिनकी संख्या आठ है –

1. स्वाधीन पतिका 2. उत्का या उत्कंठिता 3. वासक सज्जा
4. अभिसन्धिता 5. खण्डिता 6. प्रोसित पतिका
7. विप्रलब्धा 8. अभिसारिका

चित्रकारो ने प्रायः सभी प्रकार की नायिकाओं का चित्रण अपने चित्रों में किया, जिनमें स्वाधीन पतिका, वासक सज्जा तथा अभिसारिक नायिकाओं को विशेष रूचि से चित्रित किया गया है।

बारहमासा – कांगड़ा शैली के चित्रों में बारह मासा चित्रण भी विशेष स्थान रखता है। इस प्रकार के चित्रों में वर्ष के विभिन्न महिनों का चित्रण है। जिनका चित्रण माह सम्बन्धि ऋतु वर्णन के साथ प्रस्तुत किया है। अतः षडऋतु चित्रण भी कहा जाता है। ऋतुओं में छः ऋतुओं यथा ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शीत, हेमन्त तथा शिशिर को प्राकृतिक स्वरूप में चित्रित किया गया है। समूचे चित्र में ऋतु के अनुसार आकाशीय रंग, वनस्पति, पुष्प, पक्षी आदि को चित्रित कर ऋतु का वास्तविक दृश्य संजोया गया है। जिनमें कृष्ण को पुरूष व राधा को आत्मा रूप मानकर चित्रित किया गया है।

राग–रागिनी चित्रण– कांगड़ा शैली में विभिन्न राग व रागिनियों को भी चित्रित किया है। विभिन्न राग व रागिनी को स्वभावगत स्वरूप प्रदान किया गया है जो उसकी राग द्वारा उद्भासित होता है। वस्तुतः रागिनी चित्रण विभिन्न राग व रागिनियो का उनके मूलभाव के साथ रूपाकार है जो क्रमशः पुरूष व स्त्री रूप में है। जैसे राग बसन्त उसका एक पुरूष रूपाकार है तथा स्त्री रूपाकार में रागिनी तोड़ी, रागिनी आसावरी इत्यादि है।

दरबारी तथा व्यक्ति चित्र– कांगड़ा चित्रकार राजकीय संरक्षण में चित्र निर्माण किया करता था अतः दरबार संबंधी तथा राजकीय उत्सवों के चित्रण भी विशेष आग्रह के साथ चित्रित हुए है। राजाओं की विभिन्न सवारी के साथ चित्रित किया गया है। तो कहीं उत्सव में भाग लेते चित्रित किया है। राजशाही परिवार के सदस्यों का व्यक्ति चित्रण भी कांगड़ा शैली में हुआ। सामाजिक विषय संबंधी चित्रों में होली, गोवर्धन पूजा संबंधी चित्रण भी इस शैली में हुआ है। यहाँ के शासकों की रानियों के रनवास से संबंधित चित्र भी कांगड़ा शैली में बनाये गये हैं।

कांगड़ा शैली के चित्रों की विशेषताएं – पात्र चित्रण कांगड़ा शैली में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उसका नायक व नायिका की आकृति रचना है, विशेषकर नायिका चित्रण में यह गुण श्रेष्ठ है। नायिका अथवा स्त्री स्वरूप को बहुत ही सुन्दरता

के साथ लयात्मक घुमाव तथा सुडौल बनाया गया है। स्त्रियां अधिक भारी या थुथली न होकर कृषकाय व छरहरी बनाई गई है। इनकी आंखें धनुषाकार है, मुद्राओं तथा अंगुलियो में लय तथा कमनीयता है। रेखाएं अत्यन्त लयात्मक एवं सूक्ष्म विवरण के साथ अंकित की गई है। स्वरूप निर्धारण आदर्श एवं मर्यादित रूप में किया गया है। जिस प्रकार का पात्र चित्रण कांगड़ा शैली की लघु चित्रण परम्परा में है वैसा अन्य कहीं नहीं मिलता।

कांगड़ा शैली के चित्रों में रंग अत्यन्त मधुरता के साथ अपनी विशुद्धता लिए हुए हैं। मीनाकारी के समान चमकदार रंग आरम्भिक चित्रों में प्रयुक्त हुऐ हैं। बाद के चित्रों में किंचित सुफियानापन मुग़ल प्रभाव के कारण पाया जाता है।

वस्त्रों की सिलवटों तथा चेहरे के गले की गोलाई तथा आंखो के पास हल्की गहरी रंगत के साथ चित्रण किया गया है किन्तु सुकुमार कोमल अंकन से कहीं भी यथार्थ परक कठोरता का प्रदर्शन नहीं होता।

चित्रों में चारों तरफ हाशिये बनाये गये हैं जो पतले तथा पट्टीनुमा हैं। जिनमें प्रायः लाल अथवा पीला रंग सपाट रूप से भरा गया है। हाशियों में टाकरी लिपि के आलेखन भी प्राप्त होते हैं।

आत्मिक भाव – धार्मिक, पौराणिक, साहित्यिक सभी प्रकार के चित्रों में मानवीय अनुभूतियों की गहराई तथा आत्मीयता का भाव परिलक्षित होता है। इन चित्रों में सहजता व सरलता प्रमुख गुण है। धार्मिक व पौराणिक चित्रगत विषयों में भी सहजता व सरलता के साथ लोक जीवन सम्मिलित किया गया है जो तत्कालीन समाज की मर्यादित, आदर्शपूर्ण तथा आत्मिक जीवन शैली का प्रमाण है।

प्रसिद्ध कला समीक्षक श्री जे.सी.फ्रैंक ने लिखा है कि ''कांगड़ा के चित्रों की कृतियों में उषा और इन्द्र धनुषी रंगों का सुन्दर प्रदर्शन हुआ है। उनके द्वारा अंकित पुरूषों की मुखाकृतियों से वीरता और स्त्रियों की मुखाकृतियों से अद्वितीय सौन्दर्य, शालीनता और संयम टपकता है। इन्हें देखकर लगता है किसी जादू के संसार में जा पहुंचे हैं।''

परिधान – पहाड़ी शैली में स्त्रियों को लहंगा, कंचुकी व पारदर्शी दुपट्टा पहने हुए दिखाया गया है तथा विभिन्न अंगो को आभूषणों द्वारा सज्जित किया गया है। पुरूष के पहनावे में सर पर कलंगी पगड़ी, शरीर पर जामा तथा नीचे चुस्त पाजामा पहना है। पुरूषों के कंधो पर लटकता पटका तथा कमर पर पेंची बनाई गई है। कृष्ण को पीली धोती तथा सर पर मयूर पंख युक्त सोने के मुकुट के साथ चित्रित किया गया है।

अन्य विविध विषय – प्रायः सभी विषय के चित्रों यथा धार्मिक, पैराणिक, साहित्यिक, श्रृंगारिक व बारह मासा आदि चित्रों में श्री कृष्ण को नायक तथा राधा को नायिका के रूप में चित्रित किया गया है। प्राकृतिक सुरम्य वातावरण के साथ सघन वृक्ष, पुष्प, पशु व पक्षियों का चित्रण भी मनोहारी रूप में हुआ है। चित्रों में प्रसंगानुसार वाद्ययंत्रो का चित्रण भी बड़ा रूचिकर है। भवन निर्माण में प्रायः सफेद रंग प्रयोग लिया गया है। भवनो में आळे, झरोखे इत्यादि सुन्दर अभिप्रायों व अलंकरण के साथ बनाये गये हैं। भवन निर्माण में परिप्रेक्ष्य का प्रयोग वैज्ञानिक विधि अथवा एक कोणीय न होकर नन्दतिक प्रयोग कर बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रमुख चित्र –

खण्डिता नायिका – कांगड़ा शैली – यह चित्र अठारहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में बना है जो कांगड़ा शैली का है। यह चित्र नायिका भेद चित्र श्रृंखला का है। (चित्र सं. 3)प्रस्तुत

चित्र संख्या–3 खण्डिता नायिका

चित्र नायिका भेद में खण्डिता नायिका पर बनाया है। यह कांगड़ा शैली में चित्रित सभी कलात्मक विशेषताओं को धारण किये है। खण्डिता नायिका वह नायिका होती है जो रातभर अपने प्रियतम अथवा नायक का इंतजार करती है तथा उसका प्रियतम सारी रात बीत जाने पर भी नहीं आता। नायिका इन्तजार करते–करते व्यथित हो जाती है। उसका मन दुखी हो उठता है तथा सभी इच्छाएं खण्डित हो जाती है। उसका प्रियतम रात बीत जाने के बाद, भोर होने से पूर्व उसके पास आता है। यह चित्र उस स्थिति को दर्शाता है। नायक के आने पर नायिका के मुख पर उलहाने का भाव होता है। वह नायक से रात भर नहीं आने का कारण पूछती है तथा नायक के आंखो की लालिमा देखकर जान जाती है कि वह किसी और संगिनी के साथ था और इस बात पर नाराजगी जताती है।

यह चित्र इसी विषय को व्यक्त कर रहा है, नायिका की हस्त मुद्रा से स्पष्ट हो रहा है कि वह उससे पूछ रही है तथा उसके मुख से व्यथा एवं नाराजगी झलक रही है। नायक अपनी गर्दन झुकाए तथा मौन खड़ा है। उसके मुख पर शर्मिन्दगी का भाव है। आकाश का उजला नीला रंग रात के बीत जाने का समय इंगित कर रहा है तथा पहाड़ी के ऊपर सूर्य अपनी पहली किरण निकाल रहा है। नायक व नायिका कक्ष के बाहर आहते में खड़े हैं तथा पार्श्व भाग में शयन कक्ष की खिड़की खुली है जिसमें से पलंग दिखाया गया है जहाँ नायिका ने पूरी रात नायक का इन्तजार किया है।

चित्र संख्या–4 राधा–कृष्ण

चित्र में नायिका व नायक के चित्रण में बहुत सुन्दरता के साथ लयात्मक, रेखीय अंकन किया है। मुख मुद्रा तथा हाथ की मुद्राओं का महीन रेखाओं तथा सूक्ष्म बारीकि के साथ बनाया है। पहाड़ी शैली की सभी विशेषताओं को यह चित्र अपने में समेटे है।

राधा कृष्ण – यह राधा एवं कृष्ण का चित्र कांगड़ा शैली में बना है जो अठारहवीं शताब्दी उतरार्द्ध का है। यह चित्र गढ़वाल से प्राप्त हुआ है। यह श्रृंगारिक विषयक चित्र है। (चित्र सं. 4) राधा व कृष्ण आहते में चौकी पर बैठे है तथा आईने में निहार रहे हैं। आईना राधा ने अपने हाथ में रखा है जिसे एक हाथ से कृष्ण भी थामे हुए हैं। चित्र के अग्रभाग में फव्वारा है जिसके दोनो और साधिकाएं बैठी हैं तथा हाथ में माला लिए हैं जो आपस में पीठ किए बैठी है। आहते के पीछे भू दृश्य बनाया गया है जिसमें पहाड़, तालाब तथा टीले बने हैं। नीले आसमान में घुमड़ते बादल गहरे व श्वेत हल्के रंग में बने हैं। तालाब कमल के फूलों से भरा हुआ है। पीछे झाड़ियां व विभिन्न तरह के पेड़ बने हैं जो फूलों से सुशोभित हैं। पेड़ों पर पक्षी बैठे हैं।

यह चित्र आध्यात्मिक भाव को लिये है। कृष्ण को यहाँ पुरूष के रूप में तथा राधा को आत्मा अथवा प्रकृति रूप में बनाया है। आत्मा पुरूष के संपर्क में आने से माया रूपी संसार की सृष्टि होती है। कृष्ण एवं राधा का शीशे में जो प्रतिबिम्ब उभर रहा है वह माया रूपी संसार है। मानव मन इस माया रूपी संसार से आकृष्ट होकर संसार की मोह पाश में जकड़ जाता है। इस भाव को प्रकट करने के लिए एक साधिका को मुंह घुमा कर कृष्ण राधा को देखते हुए चित्रित किया गया है।

संयोजन एवं कला सौन्दर्य की दृष्टि से यह चित्र उच्च कोटि का है। सादृश्य संयोजन के सिद्धान्त पर इसकी विभक्ति की गई है। चित्र के केन्द्र में कृष्ण व राधा को बनाया गया है जो इनके अविभाजित पूर्ण स्वरूप को प्रकट करता है।

कृष्ण के सिर पर मुकुट अत्यन्त सुन्दरता व बारीकी के साथ चित्रित किया गया है। कृष्ण को अपेक्षाकृत किंचित बड़ा व राधा को छोटा बनाया गया है। कृष्ण को श्याम तथा राधा को

गौर वर्ण में बनाया गया है। साधिका जो माला को लिए मुँह घुमाए बैठी है उसके मुख पर भक्ति भाव दर्शाया गया है तथा जो महिला मुड़कर कृष्ण व राधा की तरफ देख रही है उसके मुख पर चंचलता का भाव दर्शाया गया है।

पहाड़ी शैली के सामान्य विषय एवं विशेषताएँ:—

विषय :— उत्तरी भारत में सोलहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक वैष्णव धर्म का प्रभाव जन मानस पर होने लगा न केवल जनमानस अपितु कला व साहित्य के क्षेत्र में भी यह लोकप्रिय हो गया था। कृष्ण भक्ति तत्कालीन कवियों का रूचिकर विषय बन गया तो चित्रकला भी इससे अछूती न रही। कृष्ण का जीवन लोक जीवन के बहुत करीब था, उनकी बाल—लीलाएँ, गोपाल कृष्ण, आध्यात्मिक लोक रूचि में कृष्ण पुरूष के रूप में तथा राधा प्रकृति के रूप में चित्रों में आने लगे। श्रृंगारिक काव्य में कृष्ण नायक व राधा नायिका रूप में स्वीकार कर भक्ति काव्य रचा जाने लगा, उसी क्रम में चित्रों में भी राधा कृष्ण नायक नायिका स्वरूप में भी चित्रित होने लगे। अतः पहाड़ी चित्र शैली में धार्मिक चित्र विशेष आग्रह के साथ चित्रित किये गये।

नायक—नायिका भेद— काव्य आधारित चित्र भी पहाड़ी शैली में बहुतायत से किये गये। भानुदत्त द्वारा रचित रसमंजरी बसोहली के राजा कृपाल पाल का प्रिय काव्य ग्रन्थ था। इस ग्रन्थ में वर्णित नायक नायिका भेद, आदि विषयों पर चित्रण किया जाने लगा। रसमंजरी के अन्य श्रृंगारिक प्रसंगो के चित्रण में कृष्ण को नायक रूप में आदर्श प्रेमी का स्वरूप प्रदान किया गया है।

बारहमासा व रागमाला— इसी प्रकार बारहमासा चित्र श्रृंखलाओं का चित्रण भी पहाड़ी शैली की प्रमुख विशेषता रही है। इसमें वर्ष के विभिन्न् ऋतुओं के आधार पर श्रृंगारिक विषयों का चित्रण किया गया है। बारहमासा के समान ही रागमाला पर आधारित चित्रण भी बहुतायत से किया गया है। इस रागमाला चित्रण तथा बारहमासा चित्रण में भी कृष्ण व राधा को नायक व नायिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

धार्मिक — कृष्ण भक्ति चित्रण के अतिरिक्त भागवत पुराण, रामायण, दुर्गासप्तशती तथा रूकमणी मंगल आदि विषयों पर भी धार्मिक चित्रण किया गया है।

दरबारी — पहाड़ी चित्रों में विषय के रूप में धार्मिक चित्रों व श्रृंगारिक काव्य आधारित चित्रों के अलावा दरबार संबन्धी चित्रण, जिनमें शिकार चित्र, दरबार उत्सव चित्र, राजशाही व्यक्ति चित्रण तथा रानियो के अन्तःपुर के चित्र भी विशेष रूचि के साथ चित्रित किये गये।

पशु पक्षी— पहाड़ी चित्रों में पशु पक्षियों का चित्रण भी बड़ा मनोहारी हुआ है। सभी प्रकार के विषय चित्रण में प्रायः पशु व पक्षी नायक व नायिका के साथ सहचर रूप में विद्यमान रहे है। इनका चित्रण भी मन भावना के अनुकूल तथा जीवंत किया गया। इनकी आंगिक गति व शारीरिक रचना का तथा पैरो आदि के अंकन को सूक्ष्मता एवं सजीवता के साथ अंकित किया गया है।

पहाड़ी चित्र शैली की सामान्य विशेषताएं—

पहाड़ी चित्र शैली के चित्रों का संयोजन, भावात्मकता, सुन्दरता, कोमलता, सरसता, मन्त्रमुग्ध कर देते हैं। काव्यात्मक लय व रूपगत सौन्दर्य चित्रों में अनुपम प्रभाव भर देते हैं। चित्रों को बहुत सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया गया है। चमकदार रंग, आकृतियों की लावण्यबद्ध गोलाई और शारीरिक गठन शीलता पहाड़ी चित्र शैली को उत्कृष्ट स्तर तक ले जाती है। यद्यपि बसहोली शैली में कांगड़ा के समान रेखांकन उपलब्ध नहीं है तथापि बसौली शैली भी श्रेष्ठ शैली कहलाने का अधिकार रखती है क्योंकि इस शैली में भी रंग योजना व भावाभिव्यक्ति सर्वोत्कृष्ट रूप में पाई जाती है।

हाशिए — चित्रों के चारों तरफ लाल अथवा पीले रंग के हाशिये चित्रित किये गये हैं। हाशियों में किसी—किसी चित्र में आलेखन भी किया गया है। सीधे व स्पष्ट हाशिए मुग़ल कालीन हाशियों से भिन्न है। लाल रंग के हाशियों पर कहीं—कहीं टाकरी लिपि में लेख भी लिखे है। रसमंजरी तथा गीत गोविन्द पर आधारित चित्रों की पृष्ठिका पर संस्कृत में छन्द भी अंकित किये गये हैं।

रंग योजना — पहाड़ी चित्रों में रंगो का प्रयोग बड़ी रोचकता के साथ किया गया हैं रंग योजना चित्रों में अद्भुत सौन्दर्य को प्रस्तुत करती है। कांगड़ा शैली में जहाँ सौन्दर्य चित्र की गतिज योजना तथा सूक्ष्म गोलाई लिये पात्र चित्रण से प्रकट होता है वहीं बसोहली के चित्रों में रंग अद्भुत आकर्षण लिए हुए है। चटक रंग तथा विरोधी रंग विन्यास विशेष आग्रह के साथ प्रयोग में लाये गये हैं। वर्ण विशुद्धता दर्शक का मन मोह लेती

है। रंगो को प्रतीक रूप में प्रयोग कर चित्रों को रहस्यमय आध्यात्मिकता से युक्त कर दिया गया है। पीला रंग जहाँ पवित्रता, लाल रंग प्रेम, नीला रंग कृष्ण व बादलों की अनन्त व असीम भावना के साथ किया है।

पहाड़ी चित्रकला में चटक व विशुद्ध रंग योजना के साथ स्वर्ण व रजत रंग का प्रयोग भी अलंकरण चित्रण में किया गया है वस्त्र, आभूषण, वास्तु, झरोखों व खिड़कियों में इन रंगो का प्रयोग किया गया है। आभूषणों को चित्रित करते समय गहरे व गाढ़े रंग के उभार के साथ प्रयोग किया गया है, जिनसे मोतियों की गोलाई स्वभाविक रूप में दृष्टिगोचर होती है।

प्रकृति चित्रण – पहाड़ी चित्रों में प्राकृतिक वातावरण को सौन्दर्यात्मक ढंग से चित्रित किया गया है। वृक्षों की अनेकों प्रजातियों को अलग–अलग अलंकारिक योजना से एक क्रमबद्व तरीके से गहरी पृष्ठभूमि में हल्के रंगो की बारीक रेखाओं द्वारा अलंकारिकता के साथ चित्रित किया है। क्षितिज रेखा को चित्र में थोड़ा अधिक ऊपर की तरफ रखा गया है जिससे समूचा चित्र वृक्ष व लताओं से आच्छादित लगता है। वृक्षों की पत्तियां बनाने में गहरी रेखा का प्रयोग किया गया है। बारहमासा चित्रण में ऋतु अनुसार प्रासंगिक वनस्पति व वृक्ष अंकित हैं। चित्रण के समूचे आभा मण्डल में ऋतु अनुसार वातावरण प्रस्तुत किया गया है।

भवन चित्रण– पहाड़ी चित्रों की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है भवन चित्रण। भवनों का अंकन बहुत भव्य व कलापूर्ण है। भवन प्रायः सफेद रंग में बनाये गये है। स्तम्भों को अलंकरण युक्त बनाया गया है। मीनारों पर प्रायः गुम्बद तथा छज्जों में जालियां चित्रित की गई है। भवन चित्रण में दृष्टिगत परिप्रेक्ष्य का प्रयोग न करके विषय की प्रस्तुति अनुसार परिप्रेक्ष्य का नन्दतिक प्रयोग किया गया है। भवनों के सफेद रंग में अधिकांश अबरकी सफेद रंग का प्रयोग हुआ है।

पात्र चित्रण– पहाड़ी चित्र शैली में आकृतियों के चित्रण में सुनियोजित गोलाई व सुडौलता है। स्त्रियों के मुख्य चित्रण, अंग भंगिमा तथा हस्त मुद्राओं में कलाकार ने अद्वितीय कला का परिचय दिया है। मानवाकृतियों में नेत्रों को कमलाकार बनाया गया है। गोल चिबुक, पतले गुलाबी होंठ व नासिका सीधी व लम्बी बनाई गई है। चेहरे में गोलाई लाने के लिए गर्दन के पास व आंखो के पास कोमल छाया का प्रयोग लिया गया है। नेत्र भावपूर्ण व चचंल बनाये गये हैं। अधिकांश चेहरे एक चश्म बनाये गये हैं। कहीं–कहीं डेढ़ चश्म चेहरों को भी बनाया गया है। बसोहली के चित्रों में मानवाकृतियों का ललाट ढालदार व नाक ऊँची बनाई है। इन्हें एक ही प्रवाह में अटूट रेखा द्वारा बनाया गया है। बसोहली चित्रकारों को बादामी वर्ण से नायिका चित्रण में विशेष रूचि रही है। स्त्रियों के केश कन्धों पर लहराते तथा पारदर्शी दुपट्टे में चमकते दिखाये गये हैं।

परिधान – पुरूष को मुगलिया प्रभाव वाला घेरदार जामा तथा पीछे झुकी पगड़ी पहने चित्रित किया गया है। स्त्रियों के परिधान में सूथन, चोली तथा पारदर्शी दुपट्टा ओढ़े दिखा गया है। कभी कभार स्त्रियां छींटदार घाघरा, चोली तथा पारदर्शी दुपट्टा ओढ़े चित्रित की गयी हैं। कृष्ण को पीताम्बर तथा पीली धोती पहने हुए बनाया गया है तथा मुकुट पर मोरपंख बनाया गया है। राधा के रूप में स्त्री सुकोमल, सुन्दर तथा लावण्य पूर्ण अंग भंगिमाओं से युक्त चित्रित की गई है। कृष्ण के गले में मोतियों की मालाएं व भुजबन्ध चित्रित है। पहाड़ी शैली में कपड़ों को अत्यन्त सुकोमलता व यथार्थपरक फरहनों के साथ बताया गया है। कपड़ों के किनारों पर सुनहरी किनारी बनाई गई है।

वाद्ययन्त्र– पहाड़ी चित्रों में वाद्य यंत्रो का चित्रण भी बहुतायत से हुआ है। तम्बुरे, ढोलक, मृदंग, मंजीरा, वीणा तथा सितार आदि अनेक वाद्ययंत्र बनाये गये हैं। पहाड़ी चित्र कलाकार की उत्कृष्ट कला प्रतिभा के परिचायक है। कलाकार ने रेखाओं की सुकोमलता, लयात्मक सुडौल आकृति चित्रण, मीनाकारी के समान चमकते रंग, प्राकृतिक सुरम्य वातावरण, चित्रण की सूक्ष्मता तथा अलौकिक प्रेम की भावाभिव्यक्ति ने इस शैली को पवित्रता के साथ कलात्मक श्रेष्ठता प्रदान की है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. मुगलकला के पतन के उपरान्त पहाड़ी शैली का विकास हुआ।
2. कांगड़ा, बसोहली, नूरपुर, गुलेल, चम्बा, कुल्लू आदि प्रमुख केन्द्र थे।
3. बसोहली शैली का विकास संग्रामपाल, मेदनीपाल व अमृतपाल के समय हुआ।
4. राजा संसारचंद ने कांगड़ा शैली का सर्वाधिक विकास

किया।

5. पहाड़ी शैली में कृष्ण और राधा की लीलाओं पर आधारित सर्वाधिक चित्र बने।
6. पहाड़ी चित्रों में मानवाकृतियां उष्ण रंगों में व प्रकृति शान्त रंगों में अंकित हुई है।
7. फत्तु, परखु, खुशाला, नयनसुख आदि प्रमुख कलाकार थे।

अभ्यास प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अजीत घोष के अनुसार नूरपुर व बसोहली के आरम्भिक काल के चित्र किस शताब्दी के हैं ?
2. यह किसका कथन है कि, कांगड़ा शैली के चित्र भित्ति चित्रों के छोटे रूप हैं।
3. कांगड़ा के प्रमुख चित्रकार कौन कौन हैं ?
4. रावी नदी के तट पर किस शैली का विकास हुआ ?
5. बसोहली चित्रों के हाशिये किन रंगो से बने है ?
6. पहाड़ी चित्रों में क्षितिज रेखा का अंकन कहां किया गया है ?
7. पहाड़ी चित्रों में भवन चित्रण में कौनसे रंग का प्रयोग हुआ है ?
8. बसोहली राज्य का संस्थापक कौन था ?
9. कांगड़ा शैली के चित्रों के हाशिए पर आलेखन किस लिपि में लिखा गया है ?
10. अंग्रेज यात्री मूर क्राफ्ट ने किस राजा के बारे में लिखा कि वह चित्रों से बहुत प्रेम करता था ?
11. बसोहली के कौनसे राजा ने अकबर के दरबार में उपस्थित होकर उसे भेंट दी ?
12. मेदनी पाल ने बसोहली में किसका निर्माण करावाया था ?
13. डॉ. आनन्द कुमार स्वामी ने पहाड़ी चित्रकला को किन दो चित्रमाला वर्गो में विभक्त किया ?
14. कांगड़ा शैली पर किस चित्रकला शैली का प्रभाव सर्वाधिक पड़ा था ?
15. पहाड़ी चित्रों में कृष्ण व राधा का चित्रण किस पंथ के अंतर्गत हुआ था ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. आनन्द कुमार स्वामी ने दक्षिणी चित्र माला में कौनसे स्थान के चित्रों को सम्मिलित किया है ?
2. पहाड़ी शैली के अंतर्गत कौन सी उपशैलियाँ आती है ?
3. रागमाला चित्रण में किस विषय पर चित्रण कार्य हुआ है ?
4. नायिकाएं कितने प्रकार की मानी गई है, उनके नाम बताएँ ?
5. कृष्ण व राधा को पहाड़ी चित्रों में किसके प्रतीक रूप में चित्रित किया गया है ?
6. बसोहली के चित्रों के बारे में नानालाल चमनलाल मेहता ने क्या कहा है ?
7. कवि जयदेव ने किस काव्य ग्रंथ की रचना की थी जिस पर पहाड़ी शैली में चित्रण किया गया है ?
8. बारह मासा के अंतर्गत किस प्रकार के चित्र बनाये जाते थे ?
9. पहाड़ी चित्रों के हाशिए मुग़ल हाशियों से किस प्रकार भिन्न थे ?
10. वासक सज्जा नायिका किसे कहा जाता है ?

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. कांगड़ा शैली की अंकन पद्धति तथा वर्ण विन्यास को समझाते हुए प्रमुख विषयों के बारे में बताइए।
2. बसोहली शैली को रंग योजना व पात्र चित्रण कांगड़ा शैली से किस प्रकार भिन्न थे, विस्तृत विवेचना कीजिए।
3. नायिका भेद क्या है, पहाड़ी चित्रों में प्रयुक्त प्रमुख नायिका का उदाहरण सहित व्याख्या करिये।
4. कांगड़ा शैली का परिचय देते हुए इसके उद्‌भव व विकास के बारे में सविस्तार बताईए।
5. बसोहली शैली के विषयों को समझाते हुए इसकी चित्रगत विशेषताएं बताइए।